MA, Semester II

Paper 5, unit I

19/2/2025

Topic – चयनात्मक अवधान का स्वरूप (Nature of Selective attention) and theory of Selective attention)

अवधान एक चयनात्मक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति किसी उत्तेजना पर अपना ध्यान क्षणभर के लिए केंद्रित करता है और अन्य उत्तेजनाओं को ध्यान केन्द्र की परिधि से बाहर स्थापित करता है जो उत्तेजना व्यक्ति के ध्यान केन्द्र में स्थापित रहती है उसपर मानसिक क्रियाशीलता को एकाग्रचित (Concentrated mental activity) करते हैं। इसी मानसिक एकाग्रचितता के कारण मानसिक निष्पादन बढ़ जाती है।

मैटलिन (Matlin, 1963) के अनुसार चयनात्मक अवधान में व्यक्ति की मानसिक क्रियाशीलता किसी एक उत्तेजना पर एकाग्र रहती है जबकि अन्य उत्तेजनाओं पर वह नहीं के बराबर ध्यान देता है।

चयनात्मक ध्यान में किसी एक ही क्रिया पर एकाग्रता रहती है अन्य क्रियाओं पर न के बराबर एकाग्रता रहती है इसलिए उन क्रियाओं की अवहेलना होती है जबकि उन क्रियाओं पर भी ध्यान देना आवश्यक होती है ऐसी स्थिति में कभी-कभी हानिकारक होता है क्योंकि ऐसी परिस्थिति में कुंठा उत्पन्न होती है।

चेरी (Cherry, 1953) के अनुसार उन्होंने अपने अध्ययन में छाया भाषी प्रविधि

Shadowing technique) का उपयोग किया है इन्होंने प्रयोज्यों के दोनों कानों में इयरफोन (earphone) लगाकर (Speaker) स्पीकर (Speaker) द्वारा दो अलग-अलग सूचनाओं को पुनरोच्चारण (recording) करने की व्यवस्था की। प्रयोज्यों को किसी एक सूचना को सुनकर हू-ब-हू उसी रूप में बोलने के लिए कहा गया। इसे द्विकर्णी श्रवण (dichotic listening) कहा जाता है। परिणाम स्वरूप यह पाया गया कि प्रयोज्य केवल उसी सूचना को दुहराने में सफल हुए जिस सूचना पर वे ध्यान दे रहे थे। दूसरी सूचना जो लगभग उसी वृत्ति से आ रही थी प्रत्यक्षण या समझने में नहीं आंशिक रूप से भी समर्थ हो सका था। यह भी देखा गया कि जो सूचना के विषय में परिवर्तन आने पर प्रयोज्य का ध्यान पहली सूचना के स्थान दूसरी सूचना पर चला जाता था। इससे स्पष्ट होता है कि सूचना में परिवर्तन आने पर एकाग्रता में बदलाव आता है।

मोरे (Moray, 1959) ने भी एक प्रयोग में पाया कि जो सूचना अवधान केन्द्र की परिधि से बाहर रहती है, जब सूचना में प्रयोज्य का नाम जोड़ देने पर प्रयोज्य के ध्यान केन्द्र में स्थापित हो जाती है।

उपरोक्त दोनों प्रयोगों से अवधान केन्द्र में उद्दीपक विशेष के स्थानान्तरण में उत्तेजना में परिवर्तन की महत्ता प्रमाणित होती है।

चयनात्मक अवधान की व्याख्या अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों ने अलग-अलग ढंग से किया है। इनमें ब्राडबेन्ट (Broadbent, 1958), ट्रीसमैन (Treisman, 1964) तथा डियूश एवं डियूश (Deutsch and Deutsch, 1963) द्वारा प्रतिपादित मॉडल को मार्गविरोधी (Bottleneck) सिद्धान्त या फिल्टर सिद्धान्त (Filter theory) के नाम से जाना जाता है।

फिल्टर सिद्धान्त के अनुसार जब एक ही साथ कई स्रोत से सूचनाओं पर ध्यान देना होता है तो दैहिक कारणों के कारण स्नायु तंत्र में ही ज्ञानेन्द्रियों द्वारा मार्ग विरोध उत्पन्न होता है जिसके कारण अनेक सूचनाओं में से कुछ सूचनाएँ अवधान केन्द्र में स्थापित हो पाती हैं और शेष सूचनाएँ मार्ग विरोध के कारण अवधान केन्द्र से बाहर ही अछूता रह जाते हैं जिसपर हम ध्यान नहीं दे पाते। सूचनाओं का फिल्टरेशन सूचनाओं के भौतिक गुणों के कारण होता है जैसे व्यक्ति ऊँचे स्वर की आवाजों पर ध्यान देता है जो कि धीमे स्वर की आवाजें इनके अवधान केन्द्र से बाहर ही रह जाती है जिसपर हमारा ध्यान नहीं जाता है।

ट्रीसमैन ने ब्राडबेन्ट के मॉडल को परिमार्जित कर उसका नाम फिल्टर (क्षीणन) (Filter attenuation) मॉडल दिया है। इसके अनुसार जब व्यक्ति दोनों कानों से अलग-अलग स्रोत से सूचनाओं को सुनता है जिस कान की सूचनाएँ संसाधित (Processing) होती हैं वे पूर्णतः अवरुद्ध नहीं होती बल्कि उनका रूप थोड़ा सा दुर्बल या धीमा हो जाता है। यही कारण है कि ऐसी

सूचनाओं से भी व्यक्ति कुछ अंशों तक अवगत हो पाता है। ट्रीजमैन ने स्वयं-तुम्ह की प्रयोग का मूल्यांकन किया है कि फिल्टरेशन की प्रक्रिया द्वारा जो सूचना व्याप केन्द्र के बाधू मार्ग अवरोध के कारण रह जाती है वे पूर्णतः लुप्त नहीं होती बल्कि उन सूचनाओं की शक्ति थोड़ी दुर्बल हो जाती है अतः ऐसी क्षीण सूचनाएं भी कुछ परिस्थिति विशेष के उच्चस्तरीय प्रत्यक्षात्मक विश्लेषण के दायरे में आ सकती है जिसके आधार पर फिल्टर प्रक्रम द्वारा क्षीण कर दी गई सूचनाओं को भी पहचान करने में भी व्यक्ति सफल होता है।

इस प्रकार चयनात्मक अवधान के संबंध में फिल्टर सिद्धान्त ही सर्वाधिक लोकप्रिय है।

Kumar Pati
Maharaja College, Ara.